legislations. We do not know that words cannot capture that state of love.	सरकारें और विधायिकाएं हैं। हम यह जानते ही नहीं कि प्रेम की अवस्था शब्दों की पहुंच से परे है।
The word love is not love. The word love is only the symbol, and it can never be the real. So, don't be mesmerized by that word love.	'प्रेम' शब्द प्रेम नहीं है। यह शब्द तो प्रतीक मात्र है अतः यह यथार्थ नहीं हो सकता। तो इस 'प्रेम' शब्द से ही सम्मोहित होकर न रह जाइए।
-7-	–७–
Know when Not to Cooperate	जानिए कि सहयोग कब नहीं करना है
When you know how to cooperate because there is this inward revolution, then you will also know when not to cooperate, which is really very important, perhaps more important. We now cooperate with any person who offers a reform, a change, which only perpetuates conflict and misery: but if we can know what it is to have the spirit of cooperation that comes into being with the understanding of the total process of the self, then there is a possibility of creating a new civilization, a totally different world in which there is no acquisitiveness, no envy, no comparison. This is not a theoretical utopia but the actual state of mind that is constantly inquiring and pursuing that which is true and blessed.	अपने भीतर इस क्रांति के चलते जब आप यह जान लें कि सहयोग कैसे किया जाए, तब आप यह भी जान पाएंगे कि सहयोग कब नहीं देना है। यह वास्तव में बहुत महत्त्वपूर्ण है––शायद और भी अधिक महत्त्वपूर्ण। आज हम हर उस व्यक्ति को सहयोग दे देते हैं जो कोई सुधार या परिवर्तन लेकर आता है, भले ही वह द्वंद्व और दुख को ही आगे बढ़ाता हो। परंतु यदि हम यह जान सकें कि यह सहयोग की भावना रखना होता क्या है जो अहं की, स्व की संपूर्ण प्रक्रिया को समझने के साथ–साथ आती है, तभी यह संभावना बनती है कि हम एक नयी सभ्यता, एक बिल्कुल भिन्न संसार की रचना कर पाएं, जिसमें न स्वामित्वभाव हो, न ईर्ष्या और न तुलना। यह कोई कोरी सैद्धांतिक कपोल–कल्पना नहीं है, अपितु यह उस मन की वास्तविक अवस्था है जो अनवरत उसकी तलाश में रहता है जो सत्य है, आशिष है।
CHAPTER THREE	**अध्याय तीन**
Work: How Do You Decide?	**कार्य : आप निर्धारित कैसे करते हैं?**
-1-	–१–
Your Life Must Not Destroy Another	आपका जीवन दूसरों के लिए तबाही न हो
Don't you want to find out if it is possible to live in this world richly, fully, happily, creatively without the destructive drive of ambition, without competition? Don't you want to know how to live so that your life will not destroy another or cast a shadow	क्या आप यह जान लेना नहीं चाहेंगे कि इस संसार में महत्त्वाकांक्षा के विध्वंसक संवेग के बिना और प्रतिस्पर्धा के बिना भी क्या उत्कृष्टतापूर्वक, सुखपूर्वक और सर्जनात्मक जीवन जीना संभव है। क्या आप नहीं जानना चाहेंगे कि आप कैसे जिएं ताकि आपका जीवन

across his path?	किसी अन्य के जीवन को विनष्ट न करे या किसी अन्य का जीवन–पथ अंधकारमय न कर दे?
You see, we think this is a Utopian dream which can never be brought about in fact; but I am not talking about utopia; that would be nonsense. Can you and I, who are simple, ordinary people, live creatively in this world without the drive of ambition which shows itself in various ways as the desire for power, position? You will find the right answer when you love what you are doing. If you are an engineer merely because you must earn a livelihood, or because your father or society expects it of you, that is another form of compulsion; and compulsion in any form creates a contradiction, conflict. Whereas if you really love to be an engineer, or a scientist, or if you can plant a tree, or paint a picture, or write a poem, not to gain recognition but just because you love to do it, then you will find that you never compete with another. I think this is the real key: to love what you do.	हम सोचते हैं कि यह एक कल्पनालोक की बात है जो वास्तविक स्वरूप नहीं ले सकती। परंतु मैं कल्पनालोक की बात नहीं कर रहा हूं। वह तो अनर्गलता होगी। क्या आप और मैं, सीधे–सादे, साधारण लोग, इस संसार में महत्त्वाकांक्षा के संवेग के बिना नहीं रह सकते जो कि नाना रूपों में प्रकट होती रहता है, जैसे अधिकार की इच्छा, प्रतिष्ठा की आकांक्षा? आप इस प्रश्न का सही उत्तर तभी पा सकेंगे जब आप जो कुछ भी करते हों, उसे प्रेम करते हों। यदि आप इंजीनियर केवल इसलिये बने हों कि आपको एक आजीविका चाहिए, या आपके पिता या समाज को आपसे यह बनने की अपेक्षा रही, तो यह एक प्रकार की बाध्यता है और बाध्यता चाहे किसी भी रूप में हो, वह विसंगति और द्वंद्व पैदा करती है। परंतु, यदि आप वास्तव में इंजीनियर अथवा वैज्ञानिक बनने में उत्सुक हों, या कोई वृक्ष इसलिये रोपें, या कोई चित्र इसलिए बनाएं, या कोई कविता केवल इसलिए लिखें क्योंकि यह सब करने से आपको प्रीति है, न कि आदर–मान पाने की लालसा, तब आप देखेंगे कि आप किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहे होते हैं। मेरे विचार से असली कुंजी यही है : जो आप करें उसमें आपकी प्रीति हो।
-2-	–२–
Find out What You Love	यह जानिए कि आपको किस कार्य से प्रीति है
But when you are young it is often very difficult to know what you love to do, because you want to do so many things. You want to be an engineer, a locomotive driver, an airplane pilot zooming along in the blue skies; or perhaps you want to be a famous orator or politician. You may want to be an artist, a chemist, a poet or a carpenter. You may want to work with your head, or do something with your hands. Is any of these things what you really love to do, or is your interest in them merely a reaction to social	जब आप युवावस्था में होते हैं, तब यह जानना बहुत कठिन होता है कि आप क्या करना पसंद करते हैं, क्योंकि तब आप बहुत से कार्य करना चाहते हैं। आप इंजीनियर, रेल–चालक या नीले आकाश की ऊंचाइयों को छूने वाला वायुयान चालक बनना चाहते हैं, या आप सुप्रसिद्ध अभिनेता या राजनेता बनना चाहते हैं। हो सकता है कि आप एक कलाकार, रसायनशास्त्री, कवि या काष्ठ–कला कुशल व्यक्ति बनना चाहते हों। आप अपने दिमाग से काम लेना चाहते हों या हाथों से। ऐसा कोई भी कार्य क्या आप इसलिए करना

pressures? How can you find out? And is not the true purpose of education to help you to find out, so that as you grow up you can begin to give your whole mind, heart and body to that which you really love to do?	चाहते हैं कि उस कार्य से आपको प्रीति है, या केवल इसलिए कि आप पर उसे करने का सामाजिक दबाव है? यह आप कैसे जान पाएंगे? और क्या शिक्षा का वास्तविक प्रयोजन आप को यह पता लगाने में 'सहायता' करना नहीं है, ताकि जैसे-जैसे आप बड़े होते जाएं वैसे-वैसे अपना तन-मन उस कार्य में लगाते चले जाएं, जिसे करने में आपको सचमुच आनंद आता हो?
To find out what you love to do demands a great deal of intelligence; because, if you are afraid of not being able to earn a livelihood, or of not fitting into this rotten society, then you will never find out. But, if you are not frightened, if you refuse to be pushed into the groove of tradition by your parents, by your teachers, by the superficial demands of society, then there is a possibility of discovering what it is you. really love to do. So, to discover, there must be no fear of not surviving.	आपके लिए कौन-सा कार्य प्रीतिकर होगा, यह जानने के लिये अत्यधिक प्रज्ञा चाहिए क्योंकि यदि आप कोई आजीविका न पा सकने के प्रति या इस भ्रष्ट समाज के खांचे में ठीक-ठीक बैठ न पाने को लेकर भयभीत हैं, तो आप यह कभी नहीं जान पाएंगे। परंतु यदि आप भयाक्रांत नहीं हैं, यदि आप अपने अध्यापकों और अभिभावकों द्वारा स्वयं को परंपराओं के सांचे में धकेले जाने से इंकार कर देते हैं, तब यह संभावना बनती है कि जो आप वास्तव में करना चाहते हैं उसे जान पाएं। और यह पता लगाना हो तो पिछड़ जाने के भय का कोई काम नहीं।
But most of us are afraid of not surviving. We say, "What will happen to me if I don't do as my parents say, if I don't fit into this society?" Being frightened, we do as we are told, and. in that there is no love, there is only contradiction; and this inner contradiction is one of the factors that bring about destructive ambition.	परंतु हममें से अधिकांश लोगों में टिक न पाने का, अपनी जगह न बना पाने का भय रहता ही है। हम कहते हैं ''यदि मैं अपने अभिभावकों के कथनानुसार नहीं चलूंगा, यदि मैं समाज के सांचे में सही तरह बैठ नहीं पाऊंगा, तो मेरा क्या होगा?'' भयाक्रांत रहने के कारण हम वैसा करते हैं जैसा हमें कहा जाता है और इसलिए इसे करने में प्रीति नहीं रहती, इसमें तो केवल विसंगतियां रहती हैं और यह आंतरिक विसंगति विध्वंसकारी महत्त्वाकांक्षा पैदा करने वाले कारकों में से एक है।
So, it is a basic function of education to help you to find out what you really love to do, so that you can give your whole mind and heart to it, because that creates human dignity, that sweeps away mediocrity, the petty bourgeois mentality. That is why it is important to have the right teachers...	अतः शिक्षा का प्रमुख कार्य है यह जानने में आपकी मदद करना कि आप किस कार्य को लगन और प्रीति से कर पाएंगे, ताकि आप अपना पूरा दिलो-दिमाग उस कार्य में लगा सकें, क्योंकि इसीसे मानवीय गरिमा आती है जो तुच्छ और ओछी बुर्जुआ मानसिकता को दूर करती है। इसीलिए सही अध्यापक का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है...

-3-	–३–
Teaching Is the Noblest Profession-	सबसे महान व्यवसाय है अध्यापन
Teaching is the noblest profession—if it can be called a profession at all. It is an art that requires, not just intellectual attainments, but infinite patience and love. To be truly educated is to understand our relationship to all things—to money, to property, to people, to nature—In the vast field of our existence.	अध्यापन को यदि किंचित भी व्यवसाय कहा जा सके, तो यह महानतम व्यवसाय है, जिसमें केवल बौद्धिक उपलब्धि ही नहीं चाहिए बल्कि असीम धैर्य और प्रेम भी चाहिए। सचमुच शिक्षित होने का अर्थ है अपने जीवन के विशाल क्षेत्र में सबके प्रति अपने संबंधों को समझना––धन के प्रति, संपत्ति के प्रति, लोगों के प्रति, प्रकृति के प्रति।
-4-	–४–
The Howling Mess	अत्यधिक अव्यवस्था का अड्डा
Questioner: In your book on education you suggest that modern education is a complete failure. 1 would like you to explain this.	प्रश्नकर्ताः अपनी पुस्तक 'ऑन एजुकेशन' –में आपने बताया है कि आधुनिक शिक्षा पूरी तरह विफल है। मैं चाहता हूं कि आप इसे समझाकर बतायें।
Krishnamurti: Is it not a failure, sir? When you go out on the street you see the poor man and the rich man; and when you look around you, you see all the so-called educated people throughout the world wrangling, fighting, killing each other in wars. There is now scientific knowledge enough to enable us to provide food, clothing and shelter for all human beings, yet it is not done. The politicians and other leaders throughout the world are educated people, they have titles, degrees, caps and gowns, they are doctors and scientists; and yet they have not created a world in which man can live happily. So modern education has failed, has it not? And if you are satisfied to be educated in the same old way, you will make another howling mess of life.	कृष्णमूर्ति : महोदय, क्या यह विफल नहीं है? जब आप बाहर सड़क पर जाते हैं तब आपको निर्धन भी दिखाई देता है और धनी भी, और यदि आप अपने चारों ओर देखें तो आप तथाकथित शिक्षित लोगों को आपस में लड़ते–झगड़ते और युद्ध में एक दूसरे की हत्या करते पाएंगे। आज हमारे पास इतनी अधिक वैज्ञानिक जानकारी है जिससे हम हरएक को रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध करा सकते हैं, परंतु ऐसा फिर भी नहीं किया जा रहा है। सारे संसार में राजनेता और अन्य नेता शिक्षित लोग ही तो हैं। उनके पास उपाधियां हैं, डिग्रियां हैं, दीक्षांत समारोह में वे सम्मानित किये गये हैं। वे चिकित्सक हैं, वैज्ञानिक हैं, परंतु फिर भी उन्होंने इस संसार को ऐसा नहीं बनाया है जिसमें मानव सुख से रह सके। तो आधुनिक शिक्षा विफल ही तो हुई, नहीं क्या? और, यदि आप शिक्षा की इसी परिपाटी से संतुष्ट हैं, तो आप जीवन को अत्यधिक अव्यवस्था वाला अड्डा बनाने जा रहे हैं।
-5-	–५–

inquiry is perhaps easier for the young, because those who are older have been battered about by life, conflicts have worn them out and death indifferent forms awaits them. This does not mean that they are incapable of purposive inquiry, but only that it is more difficult for them. Many adults are immature and rather childish, and this is a contributing cause of the confusion and misery in the world. It is the older people who are responsible for the prevailing economic and moral crisis; and Dine of our unfortunate weaknesses is that we want someone else to act for us and change the course of our lives. We wait for others to revolt and build anew, and we remain inactive until we are assured of the outcome. It is security and success that most of us are after; and a mind that is seeking security, that craves success, is not intelligent, and is therefore incapable of integrated action. There can be integrated action only if one is aware of one's own conditioning, of one's racial, national, political, and religious prejudices; that is, only if one realizes that the ways of the self are ever separative.	होता, वह तो सूझबूझ से आती है। युवाओं में जिज्ञासा की उत्कट भावना शायद बहुत सहज रूप से होती है क्योंकि वयोवृद्ध लोगों को तो जीवन चूर-चूर कर चुका होता है, द्वंद्वों के कारण वे चुक गये होते हैं और मृत्यु किसी न किसी रूप में उनकी प्रतीक्षा कर रही होती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे किसी अर्थपूर्ण जिज्ञासा के लायक नहीं रहते, परंतु उनके लिये यह कुछ अधिक दुरूह होती है। कितने ही वयस्क लोग अपरिपक्व, बल्कि बचकाने होते हैं और यह बात विश्वव्याप्त विभ्रम और दुख को बढ़ाने वाले कारणों में से एक है। ये वयस्क लोग ही हैं जो आर्थिक और नैतिक अव्यवस्था के हावी रहने के लिए ज़िम्मेदार हैं। और हमारी दुर्भाग्यपूर्ण दुर्बलताओं में से एक यह है कि हम चाहते हैं कि हमारे लिये कोई और उठे और हमारे जीवन की दिशा व दशा बदल दे। हम तो केवल प्रतीक्षारत रहते हैं कि कोई और हमारे लिये क्रांति करे, नवनिर्माण करे। और जब तक उसकी फल-प्राप्ति सुनिश्चित न हो जाए, तब तक हम निष्क्रिय बने रहते हैं। ये सुरक्षा और सफलता ही हैं, जिनके पीछे हम में से अधिकतर लोग पड़े रहते हैं। और वह मन जो सुरक्षा चाहता है सफलता का दीवाना है, वह प्रज्ञाशील नहीं होता और इसीलिए वह कोई भी कर्म समग्र रूप से करने में अक्षम रहता है। समग्र कर्म तभी संभव है जब कर्ता अपनी मानसिकता के कारकों का सुविज्ञ हो, अपने जातीय, राष्ट्रीय, राजनीतिक और धार्मिक पूर्वाग्रहों का सुविज्ञ हो, अर्थात यदि किसी को यह बोध हो जाए कि अहं का अनुकरण सदैव विभाजनकारी होता है, तभी उसके द्वारा समग्र कर्म के लिये कदम उठाये जाने की संभावना बनती है।
Life is a well of deep waters. One can come to it with small buckets and draw only a little water, or one can come with large vessels, drawing plentiful waters that will nourish and sustain. While one is young is the time to investigate, to experiment with everything-. The school should help its young people to discover their vocations and responsibilities, and not merely cram their minds with facts and technical knowledge. It should be the soil in which they can grow without fear,	जीवन तो गहरे जल वाला कुआं है। जो इसके पास एक छोटी सी बाल्टी लेकर जाता है वह उतना ही जल इससे प्राप्त कर पाता है और जो इसके पास बड़ा पात्र लेकर जाता है, वह उतना ही भरपूर जल प्राप्त कर लेता है जो उसका पोषण कर सके। जब व्यक्ति युवावस्था में होता है तब उसके पास खोजबीन करने और प्रत्येक चीज़ के साथ प्रयोग कर पाने योग्य समय होता है। स्कूलों को चाहिए कि वे अपने युवाओं की अपनी योग्यता और अपने दायित्वों का अनावरण करने में सहायता करें,

Are You Putty?	क्या आप पुट्टी हैं?
Questioner: May I know why we should not fit into our parents' plans, since they want us to be good?	प्रश्नकर्ता : क्या मैं जान सकता हूं कि हमें अपने अभिभावकों की योजना में 'फिट' क्यों नहीं होना चाहिए--आखिर वे हमारा भला ही तो चाहते हैं?
Krishnamurti: Why should you fit into your parents' plans, however worthy, however noble they may be? You are not just putty, you are not jelly to be fitted into a mold. And if you do fit in, what happens to you? You become a so-called good girl, or good boy, and then what? Do you know what it means to be good? Goodness is not just doing what society says, or what your parents say. Goodness is something entirely different, is it not? Goodness comes into being only when you have intelligence, when you have love, when you have no fear. You cannot be good if you are afraid. You can become respectable by doing what society demands—then society gives you a garland, it says what a good person you are; but merely being respectable is not being good.	कृष्णमूर्ति : आपके अभिभावकों की योजना कितनी भी सुयोग्य, कितनी भी महान क्यों न हो--आपको उसमें 'फिट' क्यों होना चाहिये? आप कोई पुट्टी नहीं हैं, जैली नहीं हैं जो किसी सांचे में 'फिट' कर दी जाए। और यदि आप 'फिट' हो भी गये तो आपका होगा क्या? आप तथाकथित 'अच्छा बच्चा' बन जाएंगे, और फिर? क्या आप जानते हैं कि 'अच्छा' होने का तात्पर्य क्या है? अच्छापन वह नहीं है जो समाज कहता है या आप के अभिभावक कहते हैं। अच्छापन तो एक बिल्कुल भिन्न चीज़ है? अच्छापन तभी आता है जब आप में प्रज्ञा आती है, प्रेम आता है, जब आप में भय नहीं रह जाता। यदि आप भयाक्रांत हैं, तो आप अच्छे नहीं हो सकते। समाज की मांग के अनुसार आचरण करते हुए आप सम्माननीय बनते हैं--समाज आप को माल्यार्पण करता है और बखान करता है कि आप कितने अच्छे व्यक्ति हैं। परंतु केवल सम्माननीय होने का अर्थ 'अच्छा' होना नहीं होता।
You see, when we are young we do not want to fit in, and at the same time we want to be good. We want to be nice, to be sweet, we want to be considerate and do kind things; but we do not know what it all means, and we are 'good' because we are afraid. Our parents say, "Be good," and most of us are good, but such 'goodness' is merely living according to their plans for us.	आपने देखा होगा कि जब हम युवावस्था में होते हैं तब समाज में 'फिट' होना नहीं चाहते, परंतु अच्छा बनना फिर भी चाहते हैं। हम भले व मृदु बनना चाहते हैं, दूसरों के बारे में विचारशील बनना चाहते हैं, दयालुतापूर्ण कार्य करना चाहते हैं, परंतु तब हम इस सब का अर्थ नहीं जान पाते। फिर हम इसलिए 'अच्छे' बनते हैं क्योंकि हम भयभीत होते हैं। हमारे अभिभावक कहते हैं ''अच्छा बनो'', और हम में से अधिकांश वैसा अच्छा बनते भी हैं परंतु ऐसा 'अच्छापन' तो केवल अभिभावकों की योजना के अनुरूप जीना होता है।
-6-	-६-
What Is Right Livelihood?	उचित आजीविका क्या होती है
Questioner: What are the foundations of	प्रश्नकर्ता : उचित आजीविका के आधारस्तंभ

right livelihood? How can I find out whether my livelihood is right, and how am I to find right livelihood in a basically wrong society?	क्या होते हैं? मैं यह कैसे जानूं कि मेरी आजीविका उचित है, और बुनियादी तौर पर गलत इस समाज में मैं उचित आजीविका को कैसे तलाश सकता हूं?
Krishnamurti: In a basically wrong society, there cannot be right livelihood. What is happening throughout the world at the present time? Whatever livelihood we have brings us to war, to general misery and destruction, which is an obvious fact. Whatever we do inevitably leads to conflict, to decay, to ruthlessness and sorrow. So the present society is basically wrong; it is founded—is it not?—on envy, hate, and the desire for power, and such a society is bound to create wrong means of livelihood, such as the soldier, the policeman, and the lawyer. By their very nature, they are a disintegrating factor in society, and the more lawyers, policemen, and soldiers there are, the more obvious the decay of society. That is what is happening throughout the world: there are more soldiers, more policemen, more lawyers, and naturally the business man goes with them. All that has to be changed in order to found a right society—and we think such a task is impossible. It is not, but it is you and I who have to do it. Because at present whatever livelihood we undertake either creates misery for another, or leads to the ultimate destruction of mankind, which is shown in our daily existence. How can that be changed? It can be changed only when you and I are not seeking power, are not envious, are not full of hatred and antagonism. When you, in your relationship, bring about transformation, then you are helping to create a new society, a society in which there are people who are not held by tradition, who do not ask anything for themselves, who are not pursuing power, because inwardly they are rich, they have found reality. Only the man who seeks reality can create a new society; only the man who loves can bring about a transformation in the world.	कृष्णमूर्ति : बुनियादी तौर पर जो गलत है उस समाज में उचित आजीविका संभव नहीं है। सारे संसार में आज क्या हो रहा है? हम कोई भी आजीविका अपनाएं, वह हमें युद्ध, व्यापक विपत्ति और विध्वंस की ओर ले जाती है। यह तथ्य किसी से छुपा नहीं है। हम जो कुछ भी करते हैं, वह अपरिहार्य रूप से हमें द्वंद्व, अवनति, क्रूरता और दुख की ओर ले जाता है। इस प्रकार वर्तमान समाज बुनियादी तौर पर गलत है--यह ईर्ष्या, घृणा और अधिकार लोलुपता की आधार शिला पर खड़ा है। ऐसे समाज में आजीविका के अनुचित तौर-तरीके ही पनप सकते हैं जैसे सैनिक, पुलिस और वकील। अपने स्वभाव से ये लोग समाज के विखंडन के कारक होते हैं। अतः जितने अधिक वकील, पुलिसकर्मी और सैनिक होंगे, समाज स्पष्ट रूप से उतना ही विखंडित होता नज़र आएगा। सारे संसार में यही सब कुछ तो हो रहा है। आज अधिक सैनिक, अधिक पुलिसकर्मी, अधिक वकील बनते जा रहे हैं और स्वाभाविक है कि कारोबार-धंधे वाला व्यक्ति भी ज़ाहिर है इन्हीं के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता है। एक समुचित समाज को स्थापित करने के लिए यह सब बदलना होगा--लेकिन हम सोचते हैं कि यह कार्य असंभव है। ऐसा है नहीं, परंतु इसे करने वाले तो आप और मैं ही हैं। क्योंकि आज हम जो भी आजीविका अपनाते हैं, वह या तो दूसरों के लिये संताप लाने वाली होती है या अंततोगत्वा मानव मात्र को विनाश की ओर ले जाने वाली--प्रतिदिन जीवन में हम यह सब देख रहे हैं। इसे बदला कैसे जाए? यह तभी बदला जा सकता है जब आप और मैं अधिकार व सत्ता की चाहना बंद कर दें, हममें ईर्ष्या न रहे, हम प्रतिद्वंद्विता और घृणा से भरे न हों। जब आप अपने संबंधों का कायाकल्प कर देंगे, तब आप नया समाज रचने में सहायक हो पाएंगे--एक ऐसा समाज जिसमें रह रहे लोग परंपराओं की बेड़ियों में जकड़े न हों, जो केवल अपना ही हित न चाहते हों, जो अधिकार व सत्ता के पीछे न दौड़ रहे हों,

	क्योंकि आंतरिक रूप से समृद्ध तो वे होते हैं जिन्होंने यथार्थ को देख–जान लिया है। वही व्यक्ति नूतन समाज की रचना कर सकता है को यथार्थ को खोज रहा है; केवल वही व्यक्ति संसार का कायाकल्प कर सकता है जो प्रेम करता है।
-7-	–७–
Do the Best You Can: You Must Eat	अपनी ओर से जितना बेहतर हो सके करें : रोज़ी तो चाहिए
I know this is not a satisfactory answer for a person who wants to find out what is the right livelihood in the present structure of society. You must do the best you can in the present structure of society—either become a photographer, a merchant, a lawyer, a policeman,, or whatever it is. But if you do, be conscious of what you are doing, be intelligent, be aware, fully cognizant, of what you are perpetuating, recognize the whole structure of society, with its corruption, with its hatred, with its envy; and if you yourself do not yield to these things, then perhaps you will be able to create a new society. But the moment you ask what is right livelihood, all these questions are inevitably there, are they not? You are not satisfied with your livelihood; you want to be envied, you want to have power, you want to have greater comforts and luxuries, position and authority, and therefore you are inevitably creating or maintaining a society that will bring destruction upon man, upon yourself.	मैं जानता हूं कि जो व्यक्ति यह जानना चाहता है कि समाज की वर्तमान संरचना में उचित आजीविका क्या है, उसके लिये यह उत्तर संतोषप्रद नहीं होगा। समाज की वर्तमान संरचना में जो आप कर सकते हैं, उसे सर्वोत्तम तरीके से कीजिए––भले ही आप एक फोटोग्राफर हों या एक व्यापारी, वकील, पुलिसकर्मी या कुछ और, परंतु आप जो कुछ भी बनें, जो कुछ भी करें, उसके प्रति सचेत रहिए, सजग रहिए, संप्रज्ञ रहिए, जो कुछ आप कर रहे हैं उसका पूरा संज्ञान रखिए। भ्रष्टाचार, घृणा और ईर्ष्या वाले इस समाज की संपूर्ण संरचना को पहचानिए, और यदि आप स्वयं इसके ढांचे में नहीं फंस रहे हैं, तब शायद आप एक नवीन समाज की रचना कर पाएं। परंतु ज्यों ही आप यह पूछते हैं कि उचित आजीविका क्या है, त्यों ही ये सभी प्रश्न सामने आ खड़े होते हैं, होते हैं न? आप अपनी आजीविका से संतुष्ट नहीं होते; आप चाहते हैं कि दूसरे आपको देखकर ईर्ष्या से जलें। आप अधिक शक्तिसंपन्न होना चाहते हैं, अधिकाधिक सुख, सुविधाएं, प्रतिष्ठा और अधिकार पाना चाहते हैं––इस प्रकार आप अपरिहार्य रूप से एक ऐसा समाज या तो रच रहे हैं या ऐसे समाज को यथावत बनाये हुए हैं जो मानव मात्र का और स्वयं आपका भी विनाश करने पर तुला हुआ है।
If you clearly see that process of destruction in your own livelihood, if you see that it is the result of your own pursuit of livelihood, then obviously you will find the right means of earning money. But first you must see the picture	यदि आप अपनी आजीविका में विनाश की प्रक्रिया को स्पष्ट देख पाएं, यदि आप देख पाएं कि यह विनाश आजीविका के पीछे आपकी दौड़ का ही परिणाम है, तभी आप धनोपार्जन के उचित माध्यम की तलाश कर पाएंगे। परंतु सर्वप्रथम आपको इस समाज की

of society as it is, a disintegrating, corrupted society; and when you see it very clearly, then, your means of earning a livelihood will come. But first you must see the picture, see the world as it is, with its national divisions, with its cruelties, ambitions, hatreds, and controls. Then, as you see it more clearly, you will find that a right means of livelihood comes into being—you don't have to seek it. But the difficulty with most of us is that we have too many responsibilities; fathers, mothers are waiting for us to earn money and support them. And as it is difficult to get a job the way society is at the present time, any job is welcome; so we fall into the machinery of society. But those who are not so compelled, who have no need of an immediate job and can therefore look at the 'whole picture, it is they who are responsible. But you see, those who are not concerned with an immediate job are caught up in something else—they are concerned with their self-expansion, with their comforts, with their luxuries, with their amusements. They have time, but are dissipating it. And those who have time are responsible for the alteration of society; those who are not immediately pressed for a livelihood should really concern themselves with this whole problem of existence, and not get entangled in mere political action, in. superficial activities. Those who have time and so-called leisure should seek out truth, because it is they who can bring about a revolution in the world, not the man whose stomach is empty. But, unfortunately, those who have leisure are not occupied with the eternal. They are occupied in filling their time. Therefore they also are a cause of misery and confusion in the world. So those of you who are listening, those of you who have a little time, should give thought and consideration to this problem, and by your own transformation you will bring about a world revolution

तस्वीर को वैसी ही देखना होगा जैसी वह है--एक विखंडी और भ्रष्ट समाज। और जब आप यह सब बिल्कुल स्पष्ट रूप से देख लें तब आती है आपके जीविकोपार्जन के माध्यम की बारी। परंतु सबसे पहले आपको वह तस्वीर देखनी ही होगी, संसार को यथावत् देखना ही होगा--इसके राष्ट्रवादी विभाजनों, इसकी क्रूरताओं, महत्त्वाकांक्षाओं, घृणाओं और दमन-शमन के साथ। जब आप यह सब अत्यधिक स्पष्ट रूप से देख लेंगे, तब आजीविका का उचित माध्यम स्वयं प्रकट हो जायेगा--आपको उसकी तलाश करने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। परंतु हमारे साथ समस्या यह है कि अनेक उत्तरदायित्व हमारे समक्ष मुंह बाये खड़े रहते हैं, माता-पिता इस प्रतीक्षा में रहते हैं कि कब हम धन कमाएं और उन्हें सहारा दें। और, जिस ढर्रे पर यह समाज चल रहा है उसमें काम-धंधा मिलना बहुत कठिन है, अतः हमें जो भी काम मिल जाता है उसे हम स्वीकार कर लेते हैं और इस प्रकार इस समाज के तंत्र में फंस कर रह जाते हैं। परंतु जो इतने विवश नहीं हैं जिन्हें काम-धंधे की तत्काल आवश्यकता नहीं है और इसलिए —पूरी तस्वीर देख सकते हैं, वे तो ज़िम्मेदार हैं ही। परंतु, देखिए कि जो तत्काल आजीविका के लिये चिंतित नहीं हैं, वे किसी और चीज़ में उलझ जाते हैं--वे अपने आत्म-प्रदर्शन में, अपनी सुख-सुविधाओं, विलासिताओं और मनोरंजनों से ही सरोकार रखने लगते हैं। उनके पास समय होता है, परंतु वे उसे व्यर्थ गंवा देते हैं। जिनके पास समय है, समाज में परिवर्तन लाना उनका दायित्व है। जिन पर नौकरी-धंधा करने का कोई तत्काल दबाव नहीं है उन्हें तो केवल राजनीति और दिखावटी कार्यकलापों के बजाय मानव-अस्तित्व की इस संपूर्ण समस्या से सचमुच सरोकार रखना चाहिए। जिनके पास समय है और जो तथाकथित अवकाश में हैं, उन्हें तो सत्य की खोज करनी ही चाहिए, क्योंकि वे ही इस संसार में क्रांति ला सकते हैं, न कि वह व्यक्ति जिसका पेट खाली है। परंतु जिनके पास अवकाश है, दुर्भाग्यवश उनका शाश्वत से कुछ लेना-देना नहीं है, इसीलिये इस संसार के दुख और विभ्रम के लिए वे भी ज़िम्मेदार हैं। तो आप में से जो लोग सुन रहे हैं, जिनके पास कुछ समय है, उन्हें इस

	समस्या पर सोचना और विचारना चाहिये--स्वयं में रूपांतरण लाकर ही आप संसार में क्रांति ला सकेंगे।
-8-	-८-
What Is Livelihood?	आजीविका क्या होती है?
Sirs, what do we mean by livelihood? It is the earning of one's needs—food, clothing, shelter—is it not? The difficulty of livelihood arises only when we use the essentials of life, food, clothing, shelter as a means of psychological aggression. That is, when we use the needs, the necessities, as means of self-aggrandizement, using the essentials as a psychological expansion of oneself.	महोदय, आजीविका से आपका तात्पर्य क्या है? यह अपनी आवश्यकताओं--रोटी, कपड़ा और मकान के लिये धनोपार्जन करना है, यही है न? आजीविका तब समस्या बन जाती है, जब हम जीवन की इन आवश्यकताओं--रोटी, कपड़ा और मकान को अपनी मनोगत महत्त्वाकांक्षा का माध्यम बना लेते हैं, अर्थात जब हम आवश्यकताओं को, इन अनिवार्यताओं को अपनी अतिमहत्ता का, स्वयं को मनोवैज्ञानिक विस्तार देने का माध्यम बना लेते हैं।
-9-	-९-
Give Back	प्रतिदान कीजिए
All that one can do, if one is earnest, if one is intelligent about this whole process, is to reject the present state of things and give to society all that one is capable of. That is, sir, you accept food, clothing, and shelter from society, and you must give something to society in return...	यदि कोई इस विषय में गंभीर है और समाज की पूरी व्यवस्था के बारे में समझ-बूझ रखता है तो वह इतना कर सकता है कि वह समाज की वर्तमान अवस्था को पूरी तरह अस्वीकार कर दे और समाज को वह सब दे दे, जो वह दे सकता है। अर्थात, आप समाज से जो रोटी, कपड़ा और मकान पा रहे हैं, उसके प्रतिदान स्वरूप उसे कुछ तो वापस दीजिए...
Now, what are you giving to society? What is society? Society is relationship with one or with many; it is your relationship with another. 'What are you giving to another? Are you giving anything to another in the real sense of the word, or merely taking payment for something?...	देखिए कि आप समाज को दे क्या रहे हैं? समाज है क्या? समाज एक अथवा अनेक के साथ संबंध-संरचना है। यह आप का दूसरों के साथ संबंध ही तो है। आप दूसरों को क्या दे रहे हैं? आप सचमुच क्या दूसरों को कुछ दे रहे हैं या महज़ लेन-देन चल रहा है?...
You are not depending on another for your psychological needs—and it is only then that you can have a right means of livelihood.	अपनी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के लिए आप दूसरों पर निर्भर नहीं रहते--आप जब यह जान लेंगे, केवल तभी आजीविका का कोई उचित माध्यम अपना सकेंगे।

You may say this is all a very complicated answer, but it is not. Life has no simple answer. The man who looks for a simple answer to life has obviously a dull mind, a stupid mind. Life has no conclusion, life has no definite pattern; life is living, altering, changing...	आप कह सकते हैं कि यह तो बहुत जटिल उत्तर है, परंतु ऐसा है नहीं। जीवन में कोई उत्तर सरल नहीं होता। जो जीवन के किसी सरल उत्तर की तलाश में है, वह मंद-बुद्धि है, मूढ़ है। जीवन को निष्कर्षों में, सुनिश्चित प्रारूपों में नहीं बांधा जा सकता। जीवन का अर्थ ही है जीना, बदलाव, परिवर्तन...
If your relationship is one of need and not of greed, then you will find the right means of livelihood where you are, even when society is corrupt.	यदि आजीविका के साथ आपका संबंध आवश्यकता पर आधारित है, लोभ-लालसा पर नहीं, तो आप जहां भी होंगे आजीविका का उचित माध्यम अपना रहे होंगे--भले ही समाज भ्रष्ट हो।
-10-	-१०-
The True Work of Man Is to Discover Truth	सत्य का अन्वेषण ही मानव का वास्तविक कार्य है
So, what is the true work of man? Surely, the true work of man is to discover truth, God; it is to love and not to be caught in his own self-enclosing activities. In the very discovery of what is true there is love, and that love in man's relationship with man will create a different civilization, a new world.	तो मानव का वास्तविक कार्य क्या है? निश्चय ही, उसका वास्तविक कार्य है सत्य का, ईश्वर का अन्वेषण करना। यह है प्रेम करना, न कि अपने ही अहं-संबद्ध कार्यकलापों के मकड़जाल में उलझे रहना। सत्य का अन्वेषण ही प्रेम का दर्शन है। और मानव-मानव के संबंधों में यही प्रेम एक भिन्न सभ्यता, एक नवीन संसार की रचना करेगा।
CHAPTER FOUR	**अध्याय - ४**
What Is the Basis for Right Action?	**सम्यक क्रिया का आधार क्या है?**
-1-	-१-
Why Change Ourselves at All?	हम स्वयं को किंचित भी क्यों बदलें?
First of all, why do we want to change what is, or bring about a transformation? Why? Because what we are dissatisfies us; it creates conflict, disturbance; and disliking that state, we want something better, something nobler, more idealistic. So, we desire transformation because there is pain, discomfort, conflict.	जो है उसे हम बदलना क्यों चाहते हैं, रुपांतरित करना क्यों चाहते हैं? क्यों? क्योंकि हम जो हैं उससे हम असंतुष्ट रहते हैं। इससे द्वंद्व और विक्षोभ पैदा होता है। और, इस अवस्था को नापसंद करने के कारण हम कुछ बेहतर, कुछ उत्कृष्ट और अधिक आदर्शपूर्ण की चाहत करने लगते हैं। अतः, इस पीड़ा, बेचैनी और द्वंद्व के चलते हम बदलाव चाहते